अक्षयलिङ्गविभो

रागम्: शङ्कराभरणम् ताळम्: मिश्र चापु

श्री मुत्तुस्वामि दीक्षित विरचिता

पल्लवि

अक्षयलिङ्गविभो स्वयंभो
अखिलाण्डकोटिप्रभो पाहि शंभो

अनुपल्लवि

अक्षरस्वरूप अमितप्रताप आरूढवृषवाह जगन्मोह

मध्यमकाल सहित्यम्

दक्षशिक्षण दक्षतरसुरलक्षण विधिविलक्षण लक्ष्यलक्षण
बहुविचक्षण सुधाभक्षण गुरुकटाक्षवीक्षण

चरणम्

बदरीवनमूलनायिकासहित भद्र काळीश भक्तविहित

मदनजनकादिदेवमहित मायाकार्यकलनारहित

सदय गुरुगुहतात गुणातीत साधुजनोपेत श ङ्करनवनीत-
हृदयविभात तुम्बुरुसङ्गीत ह्रींकारसंभूत हेमगिरिनाथ

मध्यमकाल सहित्यम्

सदाश्रितकल्पकमहीरुहपदाम्बुज भव रथगजतुरग -
पदातिसंयुतचैत्रोत्सव सदाशिव सच्चिदानन्दमय

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇